प्रकाशनार्थ

"वेटलैंड्स का आर्थिक मूल्यांकन: बिहार में आर्द्रभूमि प्रबंधन की रणनीति के लिए एक दृष्टिकोण"

विशेष व्याख्यान

पटना, 06 जुलाई। राष्ट्रीय वन महोत्सव सप्ताह के अवसर पर, आद्री, पटना में पर्यावरण ऊर्जा और जलवायु परिवर्तन केंद्र (सीईईसीसी) ने "आर्द्रभूमि का आर्थिक मूल्यांकन: बिहार में आर्द्रभूमि प्रबंधन की रणनीति के लिए एक दृष्टिकोण" पर एक विशेष व्याख्यान का आयोजन किया। व्याख्यान श्री दीपक कुमार, पर्यावरण अधिकारी (नीति और योजना), यूनाइटेड नेशन्स डेवलपमेंट प्रोग्राम, इंडिया द्वारा दिया गया।

इस व्याख्यान का उद्देश्य प्राकृतिक पूंजी के रूप में आर्द्रभूमि के आर्थिक मूल्यांकन की अवधारणा पर ज्ञान साझा करना था। बिहार में आर्द्रभूमि प्रबंधन की रणनीति बनाते हुए उन्होंने कहा कि बिहार में आर्द्रभूमि की विशाल अदृश्य पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं पर किसी का ध्यान नहीं जाता है और उनका मूल्यांकन नहीं किया जाता है। क्योंकि यह प्रावधान, विनियमन और सांस्कृतिक के साथ-साथ सहायक सेवाओं के विविध सेट प्रदान कर सकता है। उन्होंने आगे डॉलर ($) आधारित पारिस्थितिकी तंत्र मूल्यांकन और आर्द्रभूमि के उपयोग और गैर-प्रयुक्त मूल्यों और संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों को चलाने में उनकी संभावित भूमिका के बारे में बात की। उन्होंने आर्थिक मूल्यांकन के बारे में भी बताया कि आर्द्रभूमि बिहार में ऐसे महत्वपूर्ण पारिस्थितिक तंत्र और उनकी जैव विविधता की रक्षा और संरक्षण के लिए निरंतर नीतियां तैयार करने के लिए सरकारों को एक दूरदर्शी दृष्टि प्रदान करेगी। उन्होंने उल्लेख किया कि वर्तमान प्राकृतिक संसाधन मूल्यांकन प्रणाली को लागू करके आर्द्रभूमि के आर्थिक हितों को समझा और मापा जा सकता है। पारिस्थितिक तंत्र सेवाओं के आर्थिक हितों को जैव-भौतिक या अधिमान्य दृष्टिकोण से मापा जा सकता है। चूंकि बिहार में कोई निर्धारित बाजार स्थापना, संरचना नहीं है, इसलिए आर्द्रभूमि प्रदान करने वाली पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं के आर्थिक मूल्यांकन का मूल्यांकन करना एक कठिन काम है। भले ही, यदि पारिस्थितिकी तंत्र के लिए बाजार डेटा उपलब्ध है तो सामान और सेवाएं विभिन्न उपयोगकर्ताओं द्वारा उपयोग किए जा रहे संसाधनों के सकल सक्रिय उपयोग को प्रतिबिंबित नहीं कर सकती हैं।

व्याख्यान की अध्यक्षता आद्री, के निदेशक प्रोफेसर प्रभात पी घोष ने की। उन्होंने बिहार में आर्द्रभूमि की स्थिति का उल्लेख किया और कहाकि इस पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता क्यों है क्योंकि वे कार्बन तटस्थता प्राप्त करने के लिए कार्बन सिंक में एक प्रमुख भूमिका निभा सकते हैं।

(अंजनी कुमार वर्मा)